ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(12): 28-33
www.allresearchjournal.com
Received: 02-11-2024
Accepted: 03-12-2024

किशोर कुमार शर्मा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम एस जे कॉलेज, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

अशोक कुमार गुप्ता
शोध निर्देशक, हिंदी विभाग, एम एस जे कॉलेज, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
किशोर कुमार शर्मा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम एस जे कॉलेज, महाराजा सूरजमल बृज विश्वविद्यालय, भरतपुर, राजस्थान, भारत

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के कथा साहित्य में निहित संवेदनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन

किशोर कुमार शर्मा एवं अशोक कुमार गुप्ता

DOI: https://dx.doi.org/10.22271/allresearch.2025.v11.i1a.12253

सारांश

परिस्थिति-जन्य एवं सामाजिक दृष्टि से शोषित जीवन व्यतीत करने वाले हिंदी साहित्य के प्रसिद्द साहित्यकार एवं पत्रकार पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' का संबंध यथार्थवादी लेखन परंपरा से है। अपनी रचनाओं में यथार्थ प्रस्तुत करना उनके जीवन का प्रमुख ध्येय था। उनका विश्वास था कि लेखक स्वतंत्र लेखन हेतु स्वतंत्र होता है और उसकी लेखनी की कोई सीमा नहीं होती। यद्यपि यथार्थ चित्रण पर उनकी समय-समय पर अनेकों आलोचनायें हुईं, परंतु समस्त आलोचनाओं से बेखबर रह कर वह निरंतर यथार्थ चित्रण की दिशा में अग्रसर होते रहे।

उनके द्वारा प्रस्तुत यथार्थ को उनकी समस्त रचनाओं में देखा जा सकता है। बेचन विभिन्न मानवीय संवेदनाओं के सफल चित्रकार थे। उनका समस्त साहित्य मानवीय संवेदनाओं के सफल चित्रण से ओतप्रोत है। प्रेम, वात्सल्य, प्रसन्नता, ईर्ष्या, करुणा, ग्लानि, शोषण, क्रोध आदि अनेकों मानवीय संवेदनाऐं उनके साहित्य में दृष्टिगोचर हैं। प्रमुख रूप से बेचन शर्मा का कथा साहित्य इन मानवीय संवेदनाओं के चित्रण के लिए जाना जाता है जिसके अंतर्गत उन्होंने अपनी कहानियों के पात्रों की संवेदनाओं के यथार्थ चित्रण में जान फूक दी है।

प्रस्तुत शोधपत्र के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा पाण्डेय बेचन शर्मा द्वारा सृजित अपने कथा साहित्य में विभिन्न मानवीय संवेदनाओं पर न केवल प्रकाश डाला गया है, अपितु उनकी समकालीन परिदृश्य को ध्यान रखते हुए समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। साथ ही इस तथ्य की पुष्टि की गई है कि साहित्यकार परिस्थितियों द्वारा निर्मित होते हैं जिनसे प्रभावित होकर वे साहित्य की विभिन्न विधाओं से जुड़कर अपनी परिस्थितियों को प्रस्तुत एवं प्रतिबिंबित करते हैं।

कूट शब्दः कथा, साहित्य, निहित, संवेदना, समीक्षा

प्रस्तावना

कथा साहित्य लेखन की दृष्टि से हिंदी साहित्य असीम रूप से धनी है। हिंदी साहित्य में कहानी एवं उपन्यास लेखन के प्रमुख तीन काल हैं जिनमें कहानी एवं उपन्यास लिखे गए और जिन्होंने वर्तमान में भी गद्य की इस विधा के लेखन हेतु कथाकारों एवं

उपन्यासकारों को लेखन कार्य हेतु प्रेरित किया है- भारतेन्दु युग (1882 से 1916 तक), प्रेमचंद युग (1916 से 1940 तक), आधुनिक युग (1940 से आजतक)। भारतेन्दु युग से निरंतर प्रगतिशील उपन्यास विधा समकालीन हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण गद्य विधा के रूप में क्रियाशील है। आरंभिक हिन्दी उपन्यासों के अंतर्गत प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं- सन् 1877 में श्रद्धाराम फुल्लौरी द्वारा विषयवस्तु की नवीनता के आधार लिखित एवं आचार्य राम चंद्र शुक्ल द्वारा प्रशंशित सामाजिक उपन्यास 'भाग्यवती', 1882 में प्रकाशित लाला श्रीनिवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' आदि। उसके बाद प्रत्येक हिंदी साहित्य युग में उपन्यास लेखन निरंतर फलता फूलता रहा है। आधुनिक जीवन शैली और आधुनिकता के प्रभाव के बाबजूद भी उपन्यास लेखन निरंतर प्रगति की ओर उन्मुख है।

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में कहानी एवं उपन्यास एक प्रमुख विधा है जिसका लेखन हिंदी साहित्य के प्रत्येक युग में देखा जाता रहा है। वर्तमान में यद्यपि आधुनिकता ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित कर उसकी रुचियों में परिवर्तन किया है, परंतु उत्तर भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह कहना सटीक होगा कि आज भी हिंदी भाषी लोगों की पहली पसंद कहानी एवं उपन्यास ही है जिसके श्रवण, पठन एवं लेखन से लोगों को आनंद की प्राप्ति होती है। इसका प्रमुख कारण है कहानियों एवं उपन्यासों के पात्रों की वास्तविक मानव-सदृश्य संरचना एवं उक्त पात्रों द्वारा कथानक के अंतर्गत संवेदनाओं का प्रभावी प्रस्तुतीकरण। आदर्श कहानियों एवं उपन्यासों के पात्र पाठकों के जीवन की घटनाओं को प्रतिबिंबित करते है। हिंदी साहित्य ने समय-समय पर अनेकों कथाकार दिए हैं जिनको उनकी अद्भुत लेखन शैली के लिए जाना जाता है। पाण्डेय बेचन शर्मा भी ऐसे ही कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में मानवीय संवेदनाओं की निर्भीक एवं सीमा रहित अभिव्यक्ति कर हिंदी साहित्य में अपने लिए आगामी अनेक वर्षों तक महत्वपूर्ण स्थान निर्मित कर लिया है।

उपन्यास के सम लघु रूप कहानी एक ऐसी गद्य रचना है जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना प्रधान हृदयस्पर्शी एवं सुरुचिपूर्ण कथात्मक वर्णन होता है। कहानी का एक अन्य रुप लघु कथा है जिसके अंतर्गत लेखक द्वारा विषय वस्तु के मूल भाव को कुछ पंक्तियों या संवादों में ही पाठकों को समझा कर ख़त्म करना होता है। आधुनिक हिंदी लघुकथा का विकास 1900 से 1920 तक, द्विवेदी जी के निर्देशन में, सरस्वती में हुआ। हिंदी में लघु कथाकारों ने समय-समय पर साहसिक-रोमांस, विज्ञान कथा, डरावनी और ऐतिहासिक कथाओं के साथ प्रयोग किया। उपन्यास की भांति, कहानी भी वर्तमान में पाठकों में लोकप्रिय गद्य विधा है।

संवेदना शब्द किसी एक विशेष अर्थ को व्यंजित नहीं करता। यह विविध अर्थों का बोधक है। संवेदना को हम व्याकरणिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों ही रूपों से समझ सकते हैं। संवेदना शब्द की व्युत्पत्ति 'सम' उपसर्ग पूर्वक 'विद' (वेदना) धातु में ल्युट प्रत्यय लगाने से होती है अर्थात् सम + वेदना=संवेदना। यह संवेदना का व्याकरणिक अर्थ है। इसका शाब्दिक अर्थ है–प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभूति, भावना जागृति, उत्तेजना आदि।

अत: संवेदनाओं का सीधा सम्बन्ध हमारी भावनाओं और बोध से होता है। संवेदना का भाव केवल मानव को मानव से नहीं जोड़ता बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी हमारे मन में ये भाव उत्तेजित होते हैं। संवेदना की कोई सीमा नहीं, ये असीम भाव हैं। जिनसे हमारा कोई रिश्ता नहीं होता उनके प्रति भी हमारे मन में संवेदना उत्पन्न हो जाती है। मानवीय संवेदनाओं और अन्य जीवों की संवेदनाओं में मूलभूत अंतर स्वार्थ एवं बुद्धि का है।

मानव मन में समस्त प्रकार के भाव संचित होते हैं। समय समय पर वह जैसी परिस्थितियों से गुजरता है, वैसे ही भाव उसके मन में उत्तेजित होते हैं। मानवीय संवेदनाएँ मनोवैज्ञानिक रूप से मानव को प्रभावित करती हैं तथा एक मनुष्य के मन को दूसरे मनुष्य के मन से जोड़ती हैं जिसके परिणामस्वरूप वह ज्ञानेन्द्रियों के स्पंदन के कारण अन्य व्यक्तियों के, सुख, दुख, प्रेम, घृणा, लालच, करुणा, दया, ईर्ष्या, क्लेश, स्पर्धा व अहं, सद्भावना, प्रेम का अनुभव करता है तथा साथ ही वह मनुष्यों के मन से जुड़ कर उनके प्रति अनुकूल अथवा प्रतिकूल संवेदनाओं को प्रकट भी करता है।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र': हिंदी साहित्य के मूर्धन्य कथाकार

बीसवीं शताब्दी ने हिंदी साहित्य को अनेकों कथाकार दिए जिन्होंने अपने अपने तरीके से विभिन्न शैलियों का प्रयोग करते हुए अनेकों कहानियों और उपन्यासों का

सृजन किया, और इस प्रकार हिंदी साहित्य में स्वयं को कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में स्थापित किया। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' भी ऐसे ही कथाकार थे जिन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में अपनी उत्कृष्ट लेखनी से साकार रूप प्रदान किया। हिंदी साहित्य में पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' की पहचान यथार्थवादी लेखक के रूप में है जिनके लेखन का प्रमुख उद्देश्य मानव जीवन के यथार्थ को पाठकों के ह्रदय तक पहुंचाना था।

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' हिंदी के आरंभिक इतिहास के एक स्तंभ, एक मील का पत्थर रहे हैं! 'उग्र' अपने नाम के अनुकूल उग्रता और विद्रोह के प्रतीक, विचारों में उग्रता और समाज के अन्याय-अत्याचार शोषण के प्रति विद्रोह। यही कारण है कि वे समाज और साहित्य में अकेले रहे। सिद्धांत पथ पर निरंतर दृढ़चरण रहे। "उग्र' ने विवाह नहीं किया था, अतः उनकी कोई संतान नहीं थी जो अन्यान्यों की तरह अपने पिता पर काम करते, न कोई शिष्य वर्ग तैयार किया जो उनकी रचनावली, ग्रंथावली तैयार करता। 'उग्र' को हिंदी संसार समझा ही नहीं, पचासों चर्चित विवादास्पद उपन्यास, नाटक, कहानी-संग्रह, कविता-संग्रह के लेखक, अनेक ख्यात-जब्त पत्र-पत्रिकाओं के जनक-संपादक "उग्र' एक संगठित आंदोलन के शिकार हुए, उपेक्षित रहे।।

भीड़ से अलग रहने वाले उग्र जी जहां अपनी सबलता और सद्गुणों की सीमा से अपरिचित नहीं थे, वहीं अपनी दुर्बलता और दुर्गुणों की आत्मस्वीकृति में भी संकोच नहीं करते थे-निश्छल-निर्मल ह्रदय, निष्पक्ष- निर्दलीय व्यक्तित्व और निर्भीक-निश्चिंत चिंतन! वे विचारों की धुंध में कभी नहीं पड़े और न अपने मनोभावों को वाणी देने में किसी सामिष भंगिमा का ही कभी आश्रय लिया पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने आजीवन इस मान्यता पर लेखनकार्य किया कि लेखक समस्त सीमाओं से मुक्त है और जीवन का प्रत्येक पक्ष लेखन कार्य हेतु खुला हुआ है। उनसे पूर्व एवं उनके समकालीन लेखक यथार्थ के स्थान पर सीमाओं और सामाजिक मर्यादाओं से बंध कर आदर्शवादी लेखन करते थे, परंतु बेचन ने हिंदी साहित्य में एक नई लेखन परंपरा का सूत्रपात किया और अनेकों उन लेखकों को अपनी सुषुप्त इच्छाओं को जागृत करने और उनको अपनी लेखनी में पिरोने हेतु उनका मार्ग प्रशस्त किया।

यद्यपि, बेचन की यथार्थवादी शैली के लिए उनकी समय-समय पर अनेकों आलोचनाएँ हुईं, परंतु इन आलोचनाओं से बेखबर रहते हुए वे हिंदी कथा साहित्य लेखन के क्षेत्र में निरंतर उसी प्रकार अग्रसर होते रहे जिस प्रकार हाथी कुत्तों के भौंकने की परवाह किये बिना मस्त चाल के साथ आगे बढ़ता रहता है। उन्होंने काव्य, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि समस्त क्षेत्रों में उन्मुक्त रूप से अपने जीवन से जुड़ी अच्छी-बुरी, नैतिक और अनैतिक सभी घटनाओं को स्थान दिया। साहित्यकार के रूप में यद्यपि उन्होंने साहित्य की समस्त विधाओं में अपना योगदान दिया, परंतु उनका विशेष योगदान हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में है जिसके लिए वे सदैव अनुकरणीय रहेंगे।

मानवीय संवेदनाओं की यथार्थ अभिव्यक्ति और प्रेम को बेचन की पत्रकारिता और उनके द्वारा लिखित नाटकों, कहानियों और उपन्यासों आदि में स्पष्टतः देखा जा सकता है। उनकी कहानियों एवं उपन्यासों के पात्र इतने सजीव और वास्तविक प्रतीत होते हैं कि उनका पठन करते समय पाठक यह समझने में असमर्थ रहते हैं कि जिन पात्रों को वे पढ़ रहे हैं, वे काल्पनिक हैं अथवा वास्तविक।

बेचन द्वारा लिखित उपन्यासों में प्रमुख रूप से हैं- घंटा (1924), चंद हसीनों के खतूत (1927), दिल्ली का दलाल (1927), बुधुआ की बेटी (1928), शराबी (1930), सरकार तुम्हारी आँखों में (1931), जीजीजी (1943), मनुष्यानंद (1955) कला का पुरस्कार (1955), कढ़ी में कोयला (1955), फागुन के दिन चार (1960) आदि हैं। इसी प्रकार, उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं- चिनगारियाँ,1923, शैतान मंडली,1924, इन्द्रधनुष,1927, बलात्कार,1927, चॉकलेट,1928, दोजख की आग,1929, निर्लज्जा,1929, सनकी अमीर, रेशमी, व्यक्तिगत, पंजाब की महारानी, उग्र का हास्य आदि। बेचन की कहानियों और उपन्यासों में मानव जीवन की विविध संवेदनाओं का समावेश है जिनको बेचन ने पूर्व नियोजित तरीके से कथानक एवं पात्र संरचना करते समय प्रयुक्त किया है।

बेचन के साहित्य में समस्त मानवीय संवेदनाओं की निर्भीक अभिव्यक्ति है जिनको उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के कथानक में पात्रों को विभिन्न सामाजिक बुराइयों में लिप्त कर प्रस्तुत किया है। उपहास, शोक, दुःख, सहानुभूति, क्रोध, निंदा, लालच, शोषण, पीड़ा, ग्लानि, घमंड आदि वे कुछ प्रमुख मानवीय संवेदनायें हैं जिनको बेचन के लगभग प्रत्येक उपन्यास और कहानी के कथानक और पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनकी माँ द्वारा उनको अकाल एवं असामयिक मृत्यु से बचाने हेतु एक दलित को बेचने, उनको अकाल एवं असामयिक मृत्यु से बचाने हेतु बेचना, भारत की समकालीन दुर्दशा का वर्णन, उनका स्वयं का उग्र स्वभाव, सामाजिक बंधनों का वर्णन, दलित जीवन एवं समस्याएं, जजमानी प्रथा, गरीबी, बेरोजगारी, दलित शोषण, महिला उत्पीड़न, वैश्यावृत्ति आदि को उनकी कहानियों एवं उपन्यासों में यथार्थ रूप प्राप्त हुआ।

- फागुन के दिन चार के अंतर्गत महादेव के प्रति आस्था और भक्ति का सफल चित्रण किया है।

- पोली इमारत नामक कहानी संग्रह में भारतीय समाज एवं परिस्थितियों का वर्णन है तथा उक्त कहानी संग्रह में स्थान प्राप्त समस्त कहानियों के अंतर्गत समस्त मानवीय संवेदनाओं का समावेश है जो भारतीय समाज एवं परिवार के सदस्यों के जीवन में देखने को मिलती हैं।
- चित्र-विचित्र कहानी संग्रह के अंतर्गत हास्य एवं व्यंग्य से ओतप्रोत कहानियां हैं तथा हास्य-व्यंग्य से सम्बंधित मानवीय संवेदनाओं से समावेशित हैं।
- यह कंचन सी काया कहानी संग्रह के अंतर्गत स्थान प्राप्त करने वाली सभी कहानियां प्रेम और आदर्श को प्रस्तुत करती हैं।
- कालकोठरी कहानी संग्रह में जिन कहानियों ने स्थान प्राप्त किया है, वे सभी देश भक्ति और देश प्रेम से ओतप्रोत हैं जिनके अंतर्गत राष्ट्र प्रेम, शत्रुता, ईर्ष्या आदि संवेदनाओं की सफल प्रस्तुति है।
- ऐसी होली खेलो लाल कहानी संग्रह के अंतर्गत प्रकाशित समस्त कहानियां भारतीय समाज में प्रचलित परम्पराओं पर आधारित हैं तथा उनके अंतर्गत प्रेम, वात्सल्य, आनंद, ख़ुशी आदि संवेदनाओं का सजीव चित्रण है।
- मुक्ता कहानी संग्रह के अंतर्गत प्रतीकात्मक एवं भाव प्रधान कहानियां हैं और जो समस्त प्रकार की मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत हैं।
- चॉकलेट कहानी संग्रह के अंतर्गत वासना एवं अप्राकृतिक मैथुन एवं उससे मिलने वाली ख़ुशी का निर्भीक एवं उन्मुक्त चित्रण किया है।

बेचन के कथा साहित्य में समाहित संवेदनाएं

'औरतें गंदी हैं, औरतें बेवकूफ हैं, औरतें गुलाम हैं, औरतें बद तहजीब हैं- यानि दुनिया में सबसे ख़राब अगर हैं तो औरतें हैं।' (घृणा, निंदा, क्रोध)

खुदाराम और चंद हसीनों के खतूत: उग्र. पृ. 57

अब्दुल्ला के बारे में जब नैना प्रश्न करती है, तो सीरी का उत्तर आत्मविश्वास और घमंड से भरपूर होता है- 'गृहस्थों के घर में, गरीबों की झोंपड़ी में, देहातों में, गंगा यमुना के घाटों पर, तीर्थों में.....' (स्वार्थ, लालच, घमण्ड, करुणा, दया, सहानुभूति)

दिल्ली का दलाल: उग्र. पृ. 32

'अब स्त्रियों को एक बार स्वार्थी पुरुष जाति के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनी होगी।' (सहानुभूति, प्रतिशोध)

मनुष्यानंद: उग्र. पृ. 56

'स्त्रियों का केवल यही कर्तव्य है कि जिसके हाथों बिके, उसके परिवार के लिए..... अपने तन मन के लहू की एक-एक बूँद गार दे।' (ईमानदारी, वफ़ादारी).

शराबी: उग्र. पृ. 64

'गुणी हर हालत में निर्गुणी से बेहतर अपनी हिफाजत कर सकता है।' (प्रशंसा, निंदा)

सरकार तुम्हारी आँखों में: उग्र. पृ. 57

'शांति और संगीत के योग से सृष्टि करना नारी की प्रकृति है।' (शांति)

जीजी जी: उग्र. पृ. 42

'हम क्या न कहें पुरुषों को जिनके 'गोबरमेंट' में विवश बालाऐं अपना तन बेचती हैं- धन के लिए। ' (उपहास, निंदा, लालच)

कढ़ी में कोयला: उग्र. पृ. 13

'ये नवेलियाँ नाम भी कमाती हैं और नामा भी लेकिन यह संभव होता है खासी कीमत चुकाने पर।' (त्याग, लालच, सहानुभूति, निंदा)

फागुन के दिन चार: मुखड़ा: उग्र. पृ. 9

'चिड़िया ऐसी है जैसी आपने कभी देखी न हो। ' (प्रशंसा, प्रेम, गुलामी)

जुहू: उग्र. पृ. 94

'तेरी जनाना हर दिन हर मौसम में गली, गली मैला ढोती फिरती है।' (दलित चेतना, करुणा, दया, सहानुभूति)

सब्जबाग: उग्र. पृ. 42

अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य

1. हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं का संक्षिप्त परिचय प्रदान करना
2. हिंदी गद्य साहित्य को केन्द्रित कर हिंदी कथा साहित्य पर प्रकाश डालना
3. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के साहित्य की प्रमुख विशेषताओं को उजागर करना
4. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा हिंदी कथा साहित्य को दिए गए योगदान पर प्रकाश डालना
5. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के प्रमुख उपन्यासों और कहानियों में समाहित मानवीय संवेदनाओं पर प्रकाश डालना।

प्राक्कल्पना

1. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का आधुनिक हिंदी साहित्य में उल्लेखनीय स्थान है।
2. उनकी भाषा स्पष्ट, शैली ओजपूर्ण और उन्मुक्तिपूर्ण है।

3. उन्होंने भारतीय समाज और परिवार को केन्द्र में रखकर अपनी उपन्यासों और कहानियों की रचना की है।
4. उनकी उपन्यासों और कहानियों में सामान्य मानवीय संवेदनाओं का सटीक चित्रण है।

साहित्य पुनरावलोकन

रेनु बाला (2024) ने अपने शोध अध्ययन जिसका शीर्षक है 'पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के कथा साहित्य में युगबोध', के अंतर्गत पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' को हिन्दी साहित्य की बहुआयामी कला के प्रतिनिधि हस्ताक्षर के रूप में स्वीकार करते हुए लिखा है कि ' उन्होंने ने देश की पराधीनता, स्वाधीनता, साम्प्रदायिकता, गंभीर सामाजिक बुराइयाँ जैसे- यौन समस्याएँ, कुरीतियाँ, रूढ़ियाँ एवं देश की दलगत राजनीति का कटु अनुभव किया। आपने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई तथा आपकी भाषा-शैली यथार्थता से युक्त समृद्व एवं प्रभावोत्पादक है। आप जिस युग में रहे उसके बहुआयामी स्वरूप को अपने बोध के अनुसार ग्रहण किया। युगबोध तभी पूर्णता को प्राप्त होता है जब वर्तमान प्रगति और परम्परा दोनों का समन्वय स्थापित कर समाज को नई दिशा दें। प्रत्येक समाज का अपना बोध होता है और वह बोध मान्यताओं को अस्वीकार और कुछ सीमा तक स्वीकार करता है।'

डॉ. राजीव कुमार (2017) ने अपनी पुस्तक 'हिंदी गद्य विधाओं का विकासात्मक स्वरुप' के अंतर्गत स्वीकार किया है कि 'हिंदी गद्य की प्रत्येक विधा अपने आप में अनोखी है। जब से हिंदी गद्य का प्रारम्भ हुआ है, तभी से समय-समय पर आवश्यकतानुसार हिंदी गद्य की विधाओं का जन्म होता रहा है। उल्लेखनीय बात यह है कि हिंदी गद्य की प्रत्येक विधा विकास के मार्ग पर अग्रसर है और अधिक से अधिक लेखक और पाठक इनसे जुड़ रहे हैं'।

डॉ. शिवदत्त शर्मा (2015) के अनुसार, संवेदना मस्तिष्क की सामान्य एवं सरलतम प्रक्रिया है। मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों जैसे आँख, कान, नाक इत्यादि के माध्यम से भौतिक जगत का ज्ञान प्राप्त करता है। मानव मस्तिष्क से संवेदना का चिर संबंध है। मस्तिष्क की मनुष्य को अच्छे-बुरे की पहचान करवाता है क्योंकि मस्तिष्क विवेकयुक्त होता है। जब कोई भौतिक जगत की वस्तु किसी ज्ञानेन्द्रिय को प्रभावित करती है तो चेतन होजाती है। इसी प्रक्रिया को संवेदना कहते हैं।

डॉ. वि. वि. ढोमणे (2015) अपने शोध अध्ययन 'सामाजिक सन्दर्भों में आत्मकथा साहित्य' के अंतर्गत उल्लेख करते हैं कि 'पांडेय बेचन शर्मा उग्र लिखित 'अपनी खबर' लेखक की आत्मकथा है जिसमें उन्होंने उन्मुक्त एवं निर्भीक होकर अपने जीवन के ऐसे सन्दर्भों को प्रस्तुत किया है जिनको सामान्यतः प्रकट करने का सहस लोगों में नहीं होता। 'अपनी खबर' का गहन अध्ययन पाठकों को न केवल उग्र जी के व्यक्तित्व में झाँकने में समर्थ बनाता है, अपितु उनके व्यक्तिगत जीवन के ऐसे अनेकों राज उजागर करता है जिनको प्रायः शर्म के कारण अपने लेखन में सम्मिलित नहीं करते'।

श्रीमती गायत्री औदिच्य (2015) ने अपने शोध प्रबंध' हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा-साहित्य: समीक्षात्मक आकलन' के अंतर्गत आत्मकथा लेखन पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि 'आत्मकथा लिखना कोई आसान कार्य नहीं है, वल्कि यह गर्म रेत पर नंगे पैर चलने के समान है एवं अँधेरे के खिलाफ लड़ने जैसा है। आत्मकथा जीवन संघर्ष से उपजी एक संश्लिष्ट विधा है। आत्मकथा लेखन अब जीवन के इतिहास का कलात्मक प्रस्तुतीकरण मात्र नहीं है, अपितु विचारधारा की अभिव्यक्ति समाज परिवर्तन की दिक सूचक है। जिंदगी की गहराइयों से निकली और बेजोड़ शिल्प से बनी हुई सच्ची कथा ही आत्मकथा है'।

अजीत कुमार भारती (2013) ने अपने शोधपत्र 'आधुनिक हिंदी साहित्य व दलित चेतना' के अंतर्गत लिखा है कि 'भारत के नव जागरण काल के अग्रदतू भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र आधुनिक काल के युग प्रणेता साहित्यकार के रूप में हिन्दी साहित्य गगन पर अवतीर्ण हुए। उन्होंने न केवल स्वयं सामाजिक समस्याओं को अपनी साहित्यिक सर्जना का आधार बनाया वल्कि समकालीन साहित्यकारों को भी युगीन समस्याओं के चित्रण हेतु प्रोत्साहित किया'।

डॉ. इरा शर्मा (2002) अपनी पुस्तक 'दि लघुकथा: ए हिस्टोरिकल एंड लिटरेरी एनालिसिस ऑफ़ ए मॉडर्न हिंदी प्रोज जेत्र' के अंतर्गत स्पष्ट करती हैं कि 'प्रत्येक लघुकथा आकार में छोटी होती है और उसका उद्देश्य कम से कम शब्दों और पात्र संरचना की सहायता से किसी रोचक विषय को घटनाओं के साथ प्रस्तुत कर पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करना है'।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक प्रकृति का है तथा यह पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के प्रमुख उपन्यासों, कहानी संग्रहों आदि से प्राप्त विषय सामग्री और उसकी विवेचना पर आधारित है।

निष्कर्ष

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' यद्यपि अपने जीवन काल के दौरान साहित्यिक ख्याति की दृष्टि से उपेक्षित रहे और

उनकी उन्मुक्त रचनाओं और अभिव्यक्तियों के लिए उनकी आलोचना होती रही, परंतु हिंदी साहित्य की समस्त विधाओं में उनके द्वारा किया गया कार्य उनके महान हिंदी साहित्यकार होने की पुष्टि करता है। उन्होंने विशुद्ध साहित्यकार का जीवन व्यतीत किया। संपूर्ण समाज उनका संसार था जिसका उन्होंने गहनता से अवलोकन किया और उसमें व्याप्त एवं प्रचलित बुराइयों का उन्मुक्त रूप से वर्णन किया। उनके लिए जीवन का प्रत्येक मर्यादित और अमर्यादित पक्ष साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। उनका यह विश्वास कि साहित्यकार की लेखनी स्वतंत्र होती है और घटनाओं के यथार्थ चित्रण हेतु किसी भी सीमा तक जा सकती है।

पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने हिंदी साहित्य की समस्त विधाओं में अपनी लेखनी चलाई, परंतु प्रमुख रूप से अपने उपन्यास और कहानियों का सफल लेखन किया। उनके उपन्यासों और कहानियों की पात्र संरचना आदर्शवाद से प्रेरित नहीं थी, वल्कि यथार्थवाद से प्रेरित थी। यही कारण है कि उनके उपन्यासों और कहानियों के कथानक भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि से स्पर्शित हैं और उनके पात्र मानव जीवन को और उसमें समाहित विभिन्न संवेदनाओं जैसे प्रेम, घृणा, वासना, ईर्ष्या, लालच, दमन, शोषण, सहानुभूति, दया, करुणा आदि से ओतप्रोत हैं।

संदर्भ सूची

1. अजीत कुमार भारती: भारतीय भाषाओँ की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोधपत्रिका: आधुनिक हिंदी साहित्य व दलित चेतना', शब्द ब्रह्म:, c2013.
2. डॉ. इरा शर्मा: दि लघुकथा: ए हिस्टोरिकल एंड लिटरेरी एनालिसिस ऑफ़ ए मॉडर्न हिंदी प्रोज जेन्र: जनवरी 2003.
3. डॉ. राजीव कुमार: हिंदी गद्य विधाओं का विकासात्मक स्वरुप: ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2017.
4. रेनु बाला: रिसर्च रिव्यु: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसकीप्लीनरी; पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' के कथा साहित्य में युगबोध: पृष्ठ संख्या 256-260; अंक 9, क्रमांक 1: 2024.
5. डॉ. शिव दत्त शर्मा: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च; संवेदना की अवधारणा और उसके प्रकार: पृष्ठ संख्या 245-248; अंक 1, क्रमांक 7: 2015
6. डॉ. वि. वि. ढोमणे: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रेसर्चेस इन सोशल साइंसेज एंड इनफार्मेशन स्टडीज; सामाजिक सन्दर्भों में आत्मकथा साहित्य: पृष्ठ संख्या 77-83; अंक II, क्रमांक 4: 2015
7. श्रीमती गायत्री औदिच्य: 'हिंदी के साहित्यकारों का आत्मकथा-साहित्य: समीक्षात्मक आकलन': कोटा विश्वविद्यालय, कोटा; c2015.